विचार बिन्दु

विचित्र बात है कि सुख की अभिलाषा मेरे दुःख का एक अंश है। –खलील जिब्रान

चिकित्सक की गलती मानने से पहले जटिल चिकित्सा विज्ञान को समझें

वह ज़माना तो गया जब डॉक्टरों को भगवान के रूप में माना जाता था। मेडिकल सर्वोच्च नैतिक आदर्शों वाला पेशा हुआ करता था, जिसमें लोग अमीर हो जाने के लिए नहीं मानव सेवा की भावना से शामिल होते थे। फिर धीरे-धीरे यह सवाल उठने लगा कि डॉक्टर भी उन सुविधाओं की अपेक्षा क्यों न करें जिन्हें अन्य पेशे के लोग अपनी कमाई के बल पर हासिल करते हैं। इसके साथ ही रोग निदान और औषध के क्षेत्र में नई खोजों और मशीनों के विकास की जो क्रांति आई वह उद्योग और व्यवसाय की पूंजी के काबू में थी जहां मुनाफा बढ़ाना ही एक मात्र लक्ष्य होता है। इसी कारण चिकित्सा उपकरण और औषध उत्पादन का काम शस्त्र निर्माण के बाद दुनिया का सबसे बड़ा उद्योग बन गया। चिकित्सक का पेशा जो दर्द में रोगी की चिकित्सक द्वारा मदद का था वह कारोबार बन कर सेवा प्रदाता और ग्राहक के बीच वाला रिश्ता बन गया, जिसमें तनाव की स्थितियां बनना स्वाभाविक था। जब चिकित्सा का पेशा कारोबार बना तो लोकतान्त्रिक राज्य में हालात से निबटने के लिए कानूनों की जरूरत पड़ी और शनैः शनैः एक के बाद एक कानून बने और जरूरतों के अनुसार परिष्कृत भी हुए। परंतु कानून और उनका किसी परिस्थिति में न्यायिक विवेचन पर हमेशा सवाल भी उठते रहे हैं। स्वास्थ्य देखभाल का क्षेत्र बड़ा नाजुक है। वहां सटीक निदान, प्रभावी उपचार, और रोगी की बेहतर देखभाल की नींव होता है। गलत निदान से रोगियों पर गंभीर परिणाम हो सकते हैं, जिससे उन्हें लंबे समय तक पीड़ा भोगनी पड़ सकती है, अनावश्यक उपचार कराना पड़ सकता है और कुछ मामलों में मृत्यु भी हो सकती है। जब ऐसी त्रुटियां या दुर्घटनाएं होती हैं, तो स्वाभाविक ही सवाल उठता है कि क्या गलत निदान को चिकित्सकीय लापरवाही माना जाए? चिकित्सीय लापरवाही के आचरण को स्थापित करने के लिए यह जानना जरूरी है कि गलत निदान क्यों हुआ? उसमें योगदान देने वाले कौन से कारक थे? चिकित्सा में सटीक निदान इसलिए महत्वपूर्ण होता है क्योंकि यह उपचार की दिशा निर्धारित करता है और रोगी के उपचार पर सीधा असर डालता है। जहां एक सही निदान समय पर उचित चिकित्सकीय हस्तक्षेप को सक्षम बनाता है, जिससे रोगी के शीघ्र ठीक होने की सर्वोत्तम संभावना सुनिश्चित होती है वहीं एक गलत निदान रोगी के लिए प्राणघातक भी साबित हो सकता है। गलत निदान उसे माना जाता है जब एक चिकित्सा पेशेवर किसी मरीज की चिकित्सा स्थिति की सही पहचान करने में विफल रहता है या गलत तरीके से एक बीमारी को दूसरी बीमारी मान लेता है। चिकित्सक की इस त्रुटि के कारण अपर्याप्त या अनुपयुक्त उपचार हो सकता है, जिससे रोगी को नुकसान हो सकता है।

गलत निदान में योगदान देने वाले अनेक कारक माने जाते हैं, जैसे जटिल चिकित्सा स्थितियां, सीमित समय और संसाधन, संज्ञानात्मक पूर्वाठाह और अपर्याप्त संचार। कुछ चिकित्सीय स्थितियों में ऐसे लक्षण होते हैं जो अन्य बीमारियों से मेल खाते हैं, जिससे निदान चुनौतीपूर्ण हो जाता है। ऐसे मामलों में, चिकित्सा पेशेवरों को रोगी की बीमारी के मूल कारण का सटीक पता लगाने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। स्वास्थ्य देखभाल की अतिव्यस्त व्यवस्था में, चिकित्सकों को अक्सर समय की कमी और सीमित संसाधनों का सामना करना पड़ता है, जिससे पूरी तरह से रोगी की जांच करवाने या उसके व्यापक परीक्षण करवाने की उनकी क्षमता पर असर पड़ सकता है। इससे गलत निदान की संभावना बढ़ जाती है। संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह भी चिकित्सक के निर्णय को प्रभावित कर सकते हैं और उससे नैदानिक गलती हो सकती है। स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के बीच कम्यूनिकेशन में थोड़ी सी असावधानी भी गलत निदान में योगदान दे सकती है। जब रोगी की आवश्यक जानकारी प्रभावी ढंग से अस्पताल में आपस में साझा नहीं की जाती है, तो महत्वपूर्ण सुराग छूट सकते हैं, जिससे चिकित्सा स्थितियों की सटीक पहचान में बाधा आ सकती है। लेकिन चिकित्सीय लापरवाही तब होती है जब डॉक्टर या स्वास्थ्य देखभाल करने वाला रोगी की देखभाल के स्वीकृत मानकों से भटक जाता है, जिसके परिणामस्वरूप रोगी को नुकसान होता है। गलत निदान को चिकित्सीय लापरवाही मानने के लिए, यह साबित होना जरूरी होता है कि चिकित्सक का निर्णय या चूक समान परिस्थितियों में अपेक्षित देखभाल के मानक के अनुरूप नहीं था। चिकित्सीय लापरवाही स्थापित करने के लिए, यह प्रदर्शित करना भी आवश्यक होता है कि गलत निदान किसी से न होने वाली त्रुटि थी। कोई अन्य सक्षम और कुशल स्वास्थ्य देखभाल पेशेवर भी यदि वह त्रुटि कर सकता है तो वह त्रुटि लापरवाही नहीं कही जा सकती है। इसलिए केवल निदान संबंधी त्रुटियों को आवश्यक रूप से चिकित्सकीय लापरवाही नहीं मानी जा सकता। गलत निदान से जुड़े चिकित्सीय लापरवाही के मामलों में, गलत निदान और रोगी को होने वाले नुकसान के बीच सीधा संबंध स्थापित करना महत्वपूर्ण होता है। यदि गलत निदान से महत्वपूर्ण नुकसान नहीं हुआ या चिकित्सीय लापरवाही का कोई बुरा परिणाम नहीं हुआ, तो इसे कानूनी रूप से उत्तरदायी नहीं माना जा सकता है।

दूरसंचार और टेलीमेडिसिन के आधुनिक युग में अब दूर बैठे विशेषज्ञों से राय लेना संभव हो गया है। हेल्थकेयर पेशेवर डिजिटल प्रौद्योगिकियों के माध्यम से राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आपस में सहयोग कर सकते हैं। लेकिन, इस सुविधा में संभावित जोखिम को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता हैं क्योंकि भौतिक दूरी और कंप्यूटर-आधारित प्रणालियों पर निर्भरता से गलत निदान और बाद में गलत उपचार की आशंका बनी रहती है।

उन्नत चिकित्सा उपकरणों, बेहतर निदान विधियों और अत्याधुनिक उपचार विकल्पों की उपलब्धता के कारण रोगियों और उनके परिवारों की चिकित्सा पेशे से उम्मीदें बढ़ गई हैं। विभिन्न वित्तीय विकल्पों और बीमा कवरेज अक्सर रोगियों को उन्नत नैदानिक परीक्षणों और उपचारों का अनावश्यक चयन करने के लिए प्रेरित करता है। ऐसी स्थितियों में, जो मरीज़ किसी भी राशि का भुगतान करने को तैयार होते हैं, वे अपने स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं से भी बदले में अधिक लाभ की आशा करते हैं। हालांकि, यह समझना आवश्यक है कि अच्छी तरह से सुसज्जित अस्पतालों के बावजूद, सटीक निदान और प्रभावी उपचार के लिए प्राथमिक ध्यान हमेशा डॉक्टर की क्षमता, ज्ञान और कौशल पर होना चाहिए। सटीक निदान और तर्कसंगत दवा चिकित्सा का संयोजन ही अंततः आज के प्रतिस्पर्धी स्वास्थ्य देखभाल वातावरण में सकारात्मक को प्रतिष्ठा कर सकता है। गंभीर आपातकालीन स्थितियों में, प्राथमिक उद्देश्य मानव जीवन को बचाना होता है, और आपातकालीन प्रबंधन के दौरान किसी भी निदान या निर्णय व त्रुटियों को लापरवाही नहीं माना जा सकता। स्वास्थ्य सेवा प्रदाता का तत्काल ध्यान रोगी के जीवन को बचाने पर होता है। जब आपातकालीन स्थिति से सफलतापूर्वक निबट लिया जाता है, तब निदान को सत्यापित करने और उचित उपचार के साथ आगे बढ़ने के लिए आगे की जांच की जा सकती है। कुछ उदाहरणों में, जैसे कि अत्यंत दुर्लभ मेटाबोलिज़्म या आनुवंशिक विकार, के रोग असामान्य लक्षण प्रदर्शित कर सकते हैं, जिससे मानक सुविधाओं और परीक्षणों के साथ उनका निदान चुनौतीपूर्ण हो जाता है। अत्यधिक परिश्रम और सावधानी के बावजूद, ऐसे मामलों में त्रुटियां होनी संभव है। सटीक निदान सुनिश्चित करने के लिए जटिल मामलों को नवीनतम और सबसे उन्नत जांच विधियों से सुसज्जित विशेष केंद्रों को भेजने की सलाह दी जाती है। हालांकि इनमें से कुछ बीमारियां लाइलाज हो सकती हैं, लेकिन रोगी और उनके परिवार को बीमारी की प्रगति और पूर्वानुमान को प्रभावी ढंग से समझाने के लिए सटीक निदान की जरूरत होती है। दूरसंचार और टेलीमेडिसिन के आधुनिक युग में अब दूर बैठे विशेषज्ञों से राय लेना संभव हो गया है। हेल्थकेयर पेशेवर डिजिटल प्रौद्योगिकियों के माध्यम से राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आपस में सहयोग कर सकते हैं। लेकिन, इस सुविधा में संभावित जोखिम को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता हैं क्योंकि भौतिक दूरी और कंप्यूटर-आधारित प्रणालियों पर निर्भरता से गलत निदान और बाद में गलत उपचार की आशंका बनी रहती है। हालांकि स्वास्थ्य देखभाल में प्रभावी उपचार और रोगी देखभाल के लिए सटीक निदान एक मौलिक आवश्यकता होती है, लेकिन गलत निदान में चिकित्सीय लापरवाही के मुकदमों का निबटारा करते हुए अदालतों के लिए भी विभिन्न कारकों पर सावधानीपूर्वक विचार करने की आवश्यकता होती है जिसके अभाव को लेकर चिकित्सा विशेषज्ञों में बेचैनी होना स्वाभाविक है। विशेषज्ञों का मानना है कि आमतौर पर अदालतें वादी ने जो लिख कर दिया उसी पर प्रतिवादी से पैरेवार जवाब मांगती है और दोनों पक्षों की दलीलों को पढ़ और सुन कर फैसला देते हुए वे कई बार रोगी के जटिल चिकित्सकीय विवरण को ठीक से या गहराई से पढ़ने या समझने में चूक जाती हैं। किसी रोगी को नुकसान चिकित्सकीय चूक या लापरवाही से हुआ है अथवा उसके शरीर की अपनी जटिल प्राकृतिक प्रतिक्रिया के कारण से हुआ है इसका निर्धारण केवल विधि से अथवा सामान्य बुद्धि से नहीं हो सकता। न्यायिक प्रक्रिया में ऐसी परिस्थिति से निपटने का उपाय मौजूद है। अदालत चाहे तो किसी मामले में विशेषज्ञ चिकित्सक की राय लेकर उसके प्रकाश में मुकदमें का फैसला कर सकती है। ऐसा कुछ मामलों में तो होता है मगर सभी मामलों में नहीं होता। इसलिए अदालतें यदि ऐसे मुकदमों की सुनवाई करते वक़्त मामले की चिकित्सकीय गहराई में जाएं और मामलों को विधि के साथ चिकित्सकीय दृष्टि से समझ कर फैसले करें ऐसी अपेक्षा करना भी गलत नहीं है। दूसरी तरफ चिकित्सा में प्रोटोकॉल का पालन करना सबसे जरूरी होता है। विज्ञान में, प्रोटोकॉल बनाये जाते हैं और उनकी कठोरता से पालना होती है। विज्ञान में नई चीज़ों को आज़माने और रचनात्मक होने को प्रोत्साहित किया जाता है। लेकिन उसके साथ ही यह सतर्कता भी जरूरी है कि चिकित्सा के क्षेत्र में, बहुत अधिक रचनात्मक नहीं हुआ जा सकता है। क्लिनिकल मेडिसिन अविश्वसनीय रूप से एक महान पेशा है जिसे सही तरीके से समझना आवश्यक है। यह भी कि चिकित्साकर्म में विज्ञान के साथ-साथ सार्वजनिक सेवा भी निहित है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

मुख्यमंत्री की पहल पर पूर्वी राजस्थान की जीवन रेखा ई.आर.सी.पी. परियोजना का सपना होता साकार

राजस्थान नहर के बाद यह अपने आप में सबसे बड़ा प्रोजेक्ट होगा

डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

राजनीतिक आलोचना-प्रत्यालोचना को अलग कर दिया जाए तो यह साफ है कि पीकेसीईआरसीपी परियोजना के क्रियान्वयन की राह प्रशस्त होना प्रदेश के लिए देखा जाए तो बहुत बड़ी उपलब्धि है। भले ही पीकेसी ईआरसीपी से पूर्वी राजस्थान के 13 जिलों के नागरिकों और किसानों को सीधा-सीधा लाभ मिलेगा पर इसमें कोई दो राय नहीं कि राजस्थान, पंजाब और केन्द्र सरकार के साथ संपन्न एमओयू राजस्थान के लिए किसी भागीरथी वरदान से कम नहीं हैं। क्योंकि इससे प्रदेश में पेयजल, सिंचाई के लिए पानी, औद्योगिक विकास, युवाओं के लिए रोजगार के अवसर और इसी तरह के अनेक फायदे सीधे-सीधे होने वाले हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की गॉरन्टी और मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा द्वारा कार्यभार संभालने के एक माह से भी कम समय में राजस्थान के लिए जीवनीदायी इस परियोजना पर सहमति बनवाना और एमओयू कर क्रियान्वयन के स्तर पर लाना अपने आप में बड़ी बात है। देखा जाए तो राजस्थानवासियों के लिए यह साकार होता हुआ सपना है।

करीब-करीब 20 साल पुराना सपना पार्वती-कालीसिंध-चंबल इस्टर्न राजस्थान केनाल परियोजना को लेकर केन्द्र सरकार, राजस्थान व मध्यप्रदेश के बीच संपन्न करार के साथ ही साकार होने लगा है। राजस्थान नहर के बाद यह अपने आप में सबसे बड़ा प्रोजेक्ट होगा जिससे 13 जिलों के रहवासियों की सभी तरह की पानी की जरुरत पूरी हो सकेगी। इसके साथ यह भी महत्वपूर्ण होगा कि हर साल बरसात सीजन में बाढ़ के कारण जन-धन और फसलों की बर्बादी का कारण बनने वाला यह पानी पानी की समस्या से जूझ रहे प्रदेशवासियों के काम आ सकेगा। बेकार बह जाने वाला पानी संग्रहित होगा, धरती, यहां के निवासियों और मवेशियों की प्यास बुझाने के काम आ सकेगा।

दरअसल नदियों के बरबाद होते पानी का सही उपयोग तय करने के लिए 1999 में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई ने राष्ट्रीय नदी जोड़ो परियोजना आरंभ की थी। यह योजना सिरे से चढ़ती उससे पहले ही 2004 में नई सरकार आते ही इस परियोजना को ठंडें बस्ते में ड़ाल दिया गया। इसके बाद 2012 में सर्वोच्च न्यायालय ने इस महत्वाकांक्षी परियोजना को जारी रखने के केन्द्र सरकार को निर्देश दिए। राष्ट्रीय जल विकास प्राधिकरण द्वारा 44605 करोड़ की लागत से केन-बेतवा लिंक परियोजना पर काम किया जा रहा है। गंगानदी पर करीब एक हजार बांध हैं तो गोदावरी पर 350 के आसपास बांध है। इन बांधों पर पानी को सहेजते हुए नदियों के पानी को अनुपयोगी व बर्बादी का कारण बनने से बचाने के स्थान पर क्षेत्रों में पानी की समस्या का समाधान किया जाता है। मोटे रुप से देखा जाए तो नदियों को जोड़ने से पानी की बर्बादी यानी कि बाढ़ के कारण तबाही व समुद्र में समाहित होने से बचाकर पानी की समस्या के समाधान के लिए तो किया ही जा सकता हैं।

वहीं सूखे की समस्या का हल, खेती के लिए पानी की उपलब्धता और लोगों के पेयजल की समस्या का समाधान संभव है। राजस्थान नहर इसका जीता-जागता उदाहरण है जिससे मरु प्रदेश और सर्वाधिक उपजाऊ और उत्पादक हिस्सा बनने के साथ ही समग्र विकास का माध्यम बन गई है।

जहां तक पार्वती, कालीसिंध, चंबल ईस्टर्न राजस्थान केनाल परियोजना का प्रश्न है। यह राजस्थान और मध्यप्रदेश सरकार व केन्द्र से सहमति नहीं बनने के कारण लंबे समय से आगे नहीं बढ़ पा रही थी। 13 जिलों, 9 लोकसभा क्षेत्रों और करीब 83 विधानसभा क्षेत्रों से जुड़ी होने के कारण यह परियोजना राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप का कारण भी रही है। अब राजस्थान, मध्यप्रदेश और केन्द्र सरकार की आपसी सहमति और करार होने से परियोजना पर जल्दी ही काम शुरु होने की संभावना है। इस परियोजना से राजस्थान और मध्यप्रदेश दोनों को ही लाभ होगा। एक मोटे अनुमान के अनुसार इस परियोजना पर 45 हजार करोड़ रु. के व्यय होने की संभावना है जिसमें 90 प्रतिशत राशि केन्द्र सरकार द्वारा वहन की जाएगी। छोटे-मोटे 30 से ज्यादा बांध बनाये जायेंगें। 5 से 6 साल में यह परियोजना पूरी हो सकेगी। इसके बाद 13 जिलों के करीब 2 लाख 80 हजार हैक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई सुविधा उपलब्ध हो सकेगी। इन जिलों के निवासियों की पेयजल की समस्या का समाधान भी हो सकेगा। इस सबके साथ ही पानी की उपलब्धता के कारण नए उद्योग धंधें आयेंगे और इससे रोजगार व समग्र विकास संभव हो सकेगा। इस परियोजना क्षेत्र में राज्य के झालावाड़, बारां, कोटा, बूंदी, सवाई माधोपुर, अजमेर, टोंक, जयपुर, दौसा, करौली, अलवर, भरतपुर और धौलपुर जिलों के निवासी लाभान्वित हो सकेंगे। यह कोई छोटा मोटा क्षेत्र नहीं है। हांलाकि तीनों में सहमति के बाद एमओयू होने पर इसके राजनीतिक लाभ हानि का आकलन राजनीतिक दलों द्वारा किया जा रहा है। पर इसमें कोई दो राय नहीं होनी चाहिए कि आने वाले समय में यह परियोजना पूर्वी राजस्थान की जीवन रेखा बन जाएगी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की गॉरन्टी और मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा की प्राथमिकता और पहल को इसका श्रेय जाता है और निश्चित रुप से यह बधाई का कार्य है।

–डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा,
(वरिष्ठ लेखक)

"पधारो म्हारे देश" का प्रभावी विपणन हो

डॉ. अरुणा व्यास

फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ जयपुर की यात्रा का अपना एक वीडियो हाल ही सोशल मीडिया पर पर साझा किया है। यह विडियो राजस्थान की 'पधारो म्हारे देश' की राजस्थान की आवभगत और पर्यटन विशेषताओं का महती दस्तावेज है। इस तरह की यात्राओं का यही बड़ा महत्व है कि इससे किसी स्थान की पर्यटन मांग तेजी से बढ़ती है। पर्यटन अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ीकरण का बड़ा आधार भी है, पर्यटन स्थल और वहां की संस्कृति का प्रभावी विपणन। इस संबंध में कारगर नीति पर यदि कार्य किया जाता है तो इसके भविष्य में दूरगामी परिणाम सामने आ सकते हैं।

यह बात गौर करने की है कि भारत आने वाला हर तीसरा पर्यटक राजस्थान आता है। इसकी खास वजह यहां के पर्यटन स्थल तो है ही साथ ही वह अपनत्व की संस्कृति भी है जिसमे पावणों यानी मेहमानों के लिए विशेष आदर भाव है। पर्यटन की जितनी विविधता राजस्थान में है उतनी किसी दूसरे प्रदेश में नहीं है। समुद्र और बर्फ के अलावा सब कुछ तो है राजस्थान के पर्यटन में। दूर तक फैले रेत के धोरे, किले, महलों के साथ ही झीलें, कलात्मक स्थापत्य से संपन्न बावड़ियां और तालाबों के अलावा अरावली की पर्वत श्रृंखला से जुड़े पर्यटन स्थल यहां आने वाले पर्यटकों को अपने सौन्दर्य से मुग्ध करते है। गौरवमयी इतिहास से जुड़ी कथा-कहानियां, रंग-रंगीली संस्कृति और उत्सवप्रिय यहां के लोगों की आवभगत आने वाले पर्यटकों को अपना बना लेती है। यही कारण है कि सुदूर देशों से पर्यटक एक बार यहां आता है तो फिर बार-बार आता है।

राजस्थान में पर्यटन की परम्परा आरंभ से ही रही है। तब से ही जब रियासतों का एकीकरण नहीं हुआ था। राजा-महाराजाओं ने पर्यटन के महत्व को देखते हुए ही अपने किले-महलों के द्वार सुदूर देषों से आने वाले पर्यटकों के लिए खोल दिए थे। बाद में जब रियासकों का एकीकरण हुआ तो बड़ा संकट उन राजपूत ठिकानेदारों के सामने यह भी खड़ा हो गया कि कैसे बड़े-बड़े किले-महलों की सार संभाल करें। पूर्व मुख्यमंत्री रहे और बाद में उप राष्टप्रति बने स्व. भैरोंसिंह शेखावत की पहल से तब एक महत्वपूर्ण पहल राजस्थान में 'हेरिटेज होटल' योजना के अंतर्गत हुई। पचहत्तर वर्ष से पुरानी हवेली, किले महल आदि को 'हेरिटेज' की श्रेणी में रखते पर्यटन की दृष्टि से उनके संवर्धन और विकास पर रियायत, अनुदान की शुरुआत हुई और देखते ही देखते प्रदेशभर में हेरिटेज होटलों की एक शृंखला बनती चली गई। आज भी सर्वाधिक 'हेरिटेज होटल' राजस्थान में हैं। इससे न केवल हमारी ऐतिहासिक धरोहरों को संजोया जा सका बल्कि पर्यटन की दृष्टि से भी राजस्थान में आकर्षण में तेजी से इजाफा हुआ।

यह सही है, पर्यटन की प्रदेश में अभी भी अपार संभावनाएं हैं परन्तु जितनी आय पर्यटन से राजस्थान को होनी चाहिए हो नहीं रही है। बड़ा कारण यह है कि पर्यटन का सुव्यवस्थित पर्यटन ढ़ांचा अभी पूरी तरह से विकसित नहीं है। जरूरत इस बात की है कि प्रदेश की पर्यटन क्षमताओं को दृष्टिगत रखते हुए पर्यटन की स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप नीतियां बने। इसके लिए सबसे बड़ी जरूरत पर्यटन शिक्षा के ढांचे को सुदृढ करने की भी है। उद्योग के रूप में पर्यटन कैसे संचालित हो, इस पर तो वर्तमान पर्यटन शिक्षा में जोर दिया गया है परन्तु तीर्थाटन से पर्यटन की हमारी विरासत वहां नदारद है। घुम्मकड़ी से जुड़ा भारतीय दर्शन वहां बहुत से स्तरों पर नहीं है। यह होगा तभी हम संस्कृति के संरक्षण के साथ पर्यटन का प्रभावी विकास कर पाएंगे। यह समझे जाने की जरूरत है कि पर्यटन जन उद्योग है, इसका संचालन अन्य उद्योगों की भांति नहीं किया जा सकता। इसके लिए आम जन को जोड़ना अधिक जरूरी है।

जरूरी यह भी है कि राज्य में उपलब्ध पर्यटन सुविधाओं का व्यावहारिकता के स्तर पर आकलन कर उनका विकास किया जाए। अभी चिर-परिचित स्थानों के विपणन पर तो बहुत कुछ किया जा रहा है परन्तु बहुत से कम जाने-पहचाने स्थानों के विकास पर ध्यान नहीं है। उन पर ध्यान दिए जाने की जरूरत है। पर्यटन पथों का इस तरह से विकास किए जाने की भी जरूरत है कि पर्यटन पैकेज के रूप में कम परिचित स्थानों का दृश्यावलोकन कर सके। इसके साथ ही धार्मिक और घरेलू पर्यटन पर भी विशेष रूप से ध्यान दिया जाए।

जरूरत इस बात की भी है कि राज्य सरकार अपने कर्मियों को पर्यटन के लिए प्रोत्साहित करने की नीति पर भी कार्य करे। इन्टरनेट को टूर नेट के रूप में विकसित करने की पहल करें। पर्यटन केन्द्रों पर लेखकों, पत्रकारों की यात्रा भी इस दिशा में सकारात्मक पहल हो सकती है। लेखक, पत्रकारों को कम चर्चित पर्यटन स्थलों पर ले जाया जाए। वे वहां जाएंगे तो उन स्थानों के सौन्दर्य और संभावनाओं पर लिखेंगे, स्वाभाविक ही है कि जितना खर्च उनके विज्ञापन पर नहीं खर्च करना पड़ेगा उससे अधिक सरकार का प्रचार हो जाएगा। मूल बात है कि हम राज्य के पर्यटन का विपणन इस रूप में करें कि पर्यटकों के आकर्षण के साथ ही यहां की उन पर्यटन क्षमताओं का भी अधिकाधिक दोहन हो सकें, जिन पर अभी तक ध्यान नहीं दिया गया है। इसी से पर्यटन में राजस्थान अग्रणी हो सकता है।

– डॉ. अरुणा व्यास, सामयिक विषयों की टिप्पणीकार

शहीद दिवस (Martyrs Day)

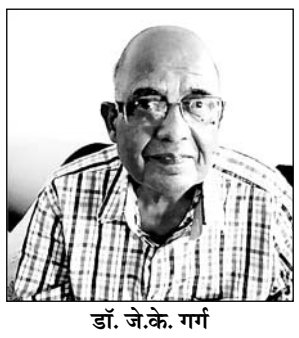

डॉ. जे.के. गर्ग

आईये जानिये कि हमारे देश के अंदर 30 जनवरी के अतिरिक्त किन-किन दिन शहीद दिवस को मनाया जाता है । आपको यह जान कर के आश्चर्य होगा कि 23 मार्च, 13 जुलाई, 17 नवम्बर और 19 नवम्बर को देश के विभन्न राज्यों में शहीद दिवस मनाया जाता है । 23 मार्च को भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को अंग्रेजों ने फांसी पर लटका दिया गया था, उनकी स्मृति में देश के कई प्रांतों में शहीद दिवस मनाया जाता है । 13 जुलाई 1931 को कश्मीर में राजा हरि सिंह की अंग्रेजी सैनिकों ने लोगों की हत्या कर दी थी । इस भयावह घटना चक्र में 22 लोग मारे गये थे । उन 22 लोगों की याद में हर वर्ष 13 जुलाई को जम्मू और कश्मीर में शहीद दिवस के रूप में मनाया जाता हैं । शेरे है पंजाब के नाम से प्रसिद्ध महान स्वतंत्रता सेनानी लाला लाजपत राय की मृत्यु साइमन कमीशन के विरूद्ध के प्रदर्शन करते समय अंग्रेजी पुलिस के लाठियों के प्रहार से हो गयी थी (तब लालाजी नें कहा था मुझे मारी गई एक एक लाठी अंग्रेजों के राज्य के अंत और उनके कैफीन पर एक एक कील का काम करेगी)। लाला लाजपत राय की पुण्यतिथि को मनाने के लिये उड़िसा में शहीद दिवस के रुप में 17 नवंबर के दिन को मनाया जाता है। झांसी में (रानी लक्ष्मीबाई का जन्मदिन) 19 नवंबर को भी शहीद दिवस के रुप में मनाया जाता है। ये उन लोगों को सम्मान देने के लिये मनाया जाता है जिन्होंने वर्ष 1857 की क्रांति के दौरान अपने जीवन का बलिदान कर दिया। प्रतिवर्ष 21 अक्टूबर को देश भर में पुलिस विभाग पुलिस शहीद (इदत्म्में ॅैं ॅ्ब) दिवस मनाता है क्योंकि 21 अक्टूबर 1959 को भारत चीन सीमा पर चीनियों द्वारा अनेक पुलिसकर्मी मार डाले गये थे ।

शहीद कहलाने के हकदार वो ही इन्सान होते हैं जो सही अर्थों में इतिहास बनाते हैं । सच्चाई यही है कि अत्याचारी शासक के मरते ही उसका शासन भी खत्म हो जाता है, किन्तु दूसरी तरफ शहीद के मरते ही जनमानस के हृदय में उस शहीद का शासन प्रारम्भ हो जाता है। जिन महापुरुषों ने हिंदुस्तान की आजादी और भारतवासियों के कल्याण एवं उत्थान हेतु अपने प्राणों की बलि दे दी थी उन स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि देने के लिये हमारे मुल्क में शहीद दिवस मनाया जाता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जन्म से तो बनिया थे लेकिन वो इंसानियत को ही अपना धर्म मानते थे। बापूजी अहिंसा के पुजारी थे और अहिंसा को आजादी पाने के लिये सबसे अच्छा हथियार मानते थे। मन में सवाल उत्पन्न होता है कि भारत में 30 जनवरी को क्यों शहीद दिवस मनाया जाता है ?

30 जनवरी 1948 की शाम को जब बापूजी अपनी नियत प्रार्थना सभा में जा रहे थे तब हिन्दू चरमपंथी नाथूराम गोडसे ने महात्मा गांधी को गोली मारकर हत्या कर दी थी तभी से महात्मा गाँधी को श्रद्धांजलि देने के लिये हर वर्ष 30 जनवरी को शहीद दिवस मनाया जाता है। प्रतिवर्ष 30 जनवरी को प्रातः काल 11 बजे सारे राष्ट्र में सायरन बजाया जाता है, तब अविलम्ब सारे नागरिक जहाँ कई भी वो हो 2 मिनट के लिये मौन रहकर शहीदों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते है । दो मिनट के बाद 11.02 बजे वापस सायरन बजता है और लोग अपना काम वापस प्रारम्भ कर देता है ।

पिछले कई वर्षों से तो ऐसा लगता है कि हम 30 जनवरी को शहीद दिवस को मनाने की केवल औपचारिकता ही निभा रहे हैं । एक तरफ तो हम बापूजी के नाम की दुहाई देकर सत्ता प्राप्त करते है वहीं गांधी के हत्यारे नाथूराम गोडसे को सच्चा देशभक्त बताते हुए बापू की देश भक्ति पर सवाल उठाते हुए उन्हें कठघरें में खड़ा करने का कुत्सित प्रयास करते हुए संसद के सदस्य तक बन जाते हैं ।

बापूजी ने तो आजाद भारत में उस राम राज्य के सपने सपने संजोये थे जहां मुस्लिम भी राम को इमामे हिद मानकर अपने दिल में राम के आदर्शो का दीपक जलाये । बहुसंख्यक समाज मंदिर मस्जिद गुरुद्वारा चर्च का आदर करे । जहाँ श्मशान कब्रिस्तान के विवाद नहीं हो । काश ऐसा हो पाता। सार्वजनिक कार्यक्रमों में बापूजी को गाली-गलोच देकर अपने को आप को गौरवान्वित महसूस करते हैं । दुःख तो इस बात का है कि कुछ लोग तालियां बजा कर उनका उत्साह वर्धन करते हैं जबकि अन्य बापू और देश भक्तों के खिलाफ अनर्गल बाते सुन कर भी मोन धारण कर लेते हैं । ऐसा सब कुछ होता देख कर महसूस होता है कि यह सब समय की बलिहारी ही है।

–डॉ. जे.के.गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कॉलेज शिक्षा जयपुर

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 31 जनवरी, 2024

माघ मास, कृष्ण पक्ष, पंचमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2080, हस्त नक्षत्र रात्रि 1:08 तक, सुकर्मा योग दिन 11:40 तक, तैतिल करण दिन 11:37 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-धनु, बुध-धनु, गुरू-मेष, शुक्र-धनु, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 1:08 तक है। कुमार योग रात्रि 1:08 तक रहेगा। रवियोग रात्रि 1:08 से आरम्भ होगा। आज विवाह मुहूर्त हस्त चित्रा में है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:59 तक, शुभ 11:14 से 12:40 तक, चर 3:22 से 4:42 तक, लाभ 4:42 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 7:17, सूर्यास्त 6:03

मेष
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। किसी भी कारण से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है।

मिथुन
घर-परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

कर्क
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। महत्वपूर्ण परामर्श मिल सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

कन्या
व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता से बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।

तुला
व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता से बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।

वृश्चिक
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

धनु
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश